International Journal of Applied Research 2022; 8(6): 74-76

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(6): 74-76
www.allresearchjournal.com
Received: 12-02-2022
Accepted: 03-04-2022

ऋचा चौहान
शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, मदरहुड विश्वविद्यालय, रूडकी उत्तराखण्ड, भारत

डॉ. कुलदीप
सहायक प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग मदरहुड विश्वविद्यालय, रूडकी उत्तराखण्ड, भारत

Corresponding Author:
ऋचा चौहान
शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, मदरहुड विश्वविद्यालय, रूडकी उत्तराखण्ड, भारत

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्ययार्थियो की संवेगात्मक बुद्धि पर उनके एकल/संयुक्त परिवार का, उनकी आयु के सन्दर्भ में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

ऋचा चौहान, डॉ. कुलदीप

सारांश
शिक्षा के द्वारा व्यक्ति सुशिक्षित सामाजिक नागरिक बनता है। शिक्षा ही वह माध्यम हैं जो व्यक्ति का सर्वागीण विकास करती है। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलती है। पर विद्यालय शिक्षा बाल्यवस्था, किशोरावस्था तक चलती है। शिक्षा को आंशिक रूप से संवेगात्मक बुद्धि प्रभावित करती हैं। प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ती ने उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के उनके एकल/संयुक्त परिवार का उनकी आयु के संदर्भ में पडने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। शोध अध्ययन के अंतर्गत हरिद्वार जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का नमूने के रूप में चयन किया गया है। विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि ज्ञात करने हेतु डा0 अरूण कुमार का संवेगात्मक परीक्षण का प्रयोग किया गया है। छात्रों की आयु के लिये दसवीं की अंकतालिका की जन्म तिथि को आधार माना गया है। परिवार के प्रकार को जानने हेतु छात्रों से प्रश्न किये गये। प्राप्त प्रदत्तो के विश्लेषण करके अध्ययन में यह पाया गया है कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उनके एकल/संयुक्त परिवार का उनकी आयु पर सार्थक प्रभाव पडता हैं।

कूटशब्द : संवेगात्मक बुद्धि, आयु, एकल, संयुक्त परिवार, उच्चतर माध्यमिक स्तर

प्रस्तावना
मनुष्य एक सामाजिक प्राणी कहलाता है। वह सामाजिक तभी बन सकता है जबकि वह समाज में गतिमान सामाजिक क्रियाओं व प्रक्रियाओं को जान सके, समझ सके और उनमें सक्रिय सहभागिता कर सकें। इन सबके लिये उसे बहुत सारी योग्यताओं क्षमताओं व कुशलताओ को सीखना होता है। परिवार समाज की मुलभूत इकाई है।

परिवार में ही वह जन्म लेता है। उठना बैठना चलना आदि सीखता है। परिवार के बाद पड़ोस के माध्यम से मिल जुलकर सीख जाता है। इस सम्बन्ध में वह पारिवारिक सदस्यों के साथ पडोसियों के साथ तथा समाज में समय समय पर विभिन्न व्यक्तियों के साथ उसकी अन्तःक्रियाएँ होती है जिन्हे वह सहकारिता व सहभागिता करता है। और वह व्यवहार के वॉछित तौर तरीके सीखने लगता है। इस प्रक्रिया में वह व्यवहार से सम्बन्धित अपेक्षित साथ, नैतिकता क्षमताओं आशाओ आकांक्षाओं और आशंकाओं से वह परिचित होता है और धीरे धीरे वह मानसिक रूप इन सामाजिक क्रिया कलापों में सहकारिता व सहभागिता की तैयारी करने लगता है। इसके लिये उसे कभी कभी साहस प्रयास करने पडते है। इन व्यवहारों में इच्छा व भावनाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उसमें संवेगों को जन्म देती है। उदाहरण दूसरों के दुख में दुखी होना अथवा दूसरे के सुख में स्वंय भी प्रसन्न होता इस परानुभूति व सहानुभूति करके अपने संवेगों को व्यक्त करने लगता है।

अपने संवेगों को जानना पहचानना और उनके सही उपयोग करने के प्रबन्धन तथा नियन्त्रण करने की योग्यता को संवेगों के साथ साथ दूसरे के संवेगों को भी जानना सम्मिलित होता है।

स्टॉलाजी ने कहा है कि 'परिवार, प्रेम और स्वेच्छा का केन्द्र होता है और बालक/बालिका का प्रथम विद्यालय होता है।

मल्होत्रा 2016 तथा सिंह एंव देजी 2018 ने अपने शोध कार्य में पाया कि पारिवारिक वातावरण का बालक/बालिका के मानसिक स्वास्थ्य पर धनात्मक सार्थक प्रभाव पडता है।

जयमाल 2017 ने अपने शोध कार्य में पाया कि पारिवारिक वातावरण का बालक/बालिका के मनोवैज्ञानिक समायोजन पर धनात्मक प्रभाव पडता है।

परिवार प्रायः दो प्रकार के होते हैं। एकल परिवार जिनमें माता पिता और उनके बच्चे रहते है। और संयुक्त परिवार जिनमें बच्चों के साथ उनके माता पिता व दादा दादी बुआ आदि सभी रहते है। एकल परिवार में बच्चों में का पालन पोषण केवल उनके माता पिता करते है और बच्चों का वार्तालाप व अन्तः क्रियाएँ अपने भाई बहनों से अथवा माता पिता से ही होता है किन्तु यदि भाई बहन न हुये तो बच्चे का यह सारा व्यवहार अपने माता पिता तक सीमित रह जाता है। और कभी कभी तो माता पिता के नौकरी करने या अन्य कारणों से माता या पिता दोनो में से एक के साथ ही वह व्यवहार होता है। जबकि संयुक्त परिवार में बच्चा अपने माता पिता भाई बहन बुआ चाचा,दादा–दादी आदि कई पारिवारिक जनो के सम्पर्क में आता है और उनसे कई बातो पर चर्चा वार्तालाप कर पाता है। ऐसे परिवार में बच्चे को अन्तः किया करने के अवसर बढ जाते हैं और उसे सीखने के लिये बहुत सारे व्यक्ति मिल जाते हैं।

संयुक्त परिवार में प्रेम, स्नेह, द्वेष मिलने के साथ साथ काम करने परस्पर बॉटने के साथ ही बिछड़ने झगडने व खुश होने व दुःखी होने के अनेको अवसर मिलते है। इस प्रकार संयुक्त परिवार की बच्चो के संवेग विकास में एकल परिवार की अपेक्ष विस्तृत भूमिका रहती है। संयुक्त परिवार में एकल परिवार की तुलना में बालक बालिकाओं को संवेगों को जानने समझने पहचानने नियंत्रण करने उचित अवसर व उचित रूप से उन्हे अपने संवेगों को व्यक्त करने की सीख सहजता व सरलता से मिल जाती है।

किन्तु जैसे जैसे बच्चे की आयु बढती जाती है। उनकी अपनी सोच समझ विकसित होने लगती है और वह दूसरो की प्रसन्नता में स्वंय प्रसन्न का तथा दूसरो के दुःख में स्वंय भी दुःखी होने लगता है। कभी कभी वह ऐसा नही भी कर पाता हैं इसके पीछे अपने तर्क होने लगते है। वह कभी बालक बालिका की कर्तव्य विमूढ भी हो जाते है। अपने को एकाकी मानने लगता है। ऐसी जठिल एकल परिवार या संयुक्त परिवार दोनो में बालक बालिकाओं के समक्ष आ जाती है। संवेगात्मक बुद्धि का सार्थक प्रयोग नही पाते है। वे दिग्भ्रमित हो जाते है।

किशोरावस्था तक पहुॅचते पहुॅचते बालक बालिकाओं के परिचितों का सम्बन्धियों का क्षेत्र बढने लगता है। इन सबके साथ तरह तरह के व्यवहारों व अन्तःक्रियाओं में उसकी सक्रियता बढती जाती है। इन सबका प्रभाव किशोर किशोरियों के मनो दशाओं पर पडने लगता है। इससे उसकी भावनाओं व संवेगों में उथल पुथल सी मच जाती है। इनसे घटने वाली प्रक्रियाओ में उसकी संवेगात्मकता भी प्रभावित हो जाती है। इन परिस्थितियों में एकल परिवार व संयुक्त परिवार का किशोरों की बढती आयु क्रम पर पडने लगता है किन्तु इसकी यथार्थ स्थिति क्या होती है। इसे जानने के लिये ही प्रस्तुत शोध कार्य सम्पन्न किया गया हैं

शोध समस्या कथनः– उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर उनके एकल/संयुक्त परिवार का उसकी आयु क्रम के सन्दर्भ में पडने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन के उद्देश्य

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो की –

1. 15 से 19 वर्ष के मध्य छः छः माह की बढती आयु क्रम में उनकी संवेगात्मक बुद्धि की गणना करना।
2. विद्यार्थियों को उनके एकल और संयुक्त परिवार के संदर्भ में समूहीकृत करना।
3. एकल एंव सयुंक्त परिवार के विद्यार्थियों की 15 से 19 वर्ष के मध्य छः छः माह को बढते आयु क्रम में उसकी संवेगात्मक बुद्धि की तुलना करना।
4. 15 से 17 वर्ष के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के माध्यमों के एकल संयुक्त परिवार के सन्दर्भ में तुलना करना।
5. 17 से 19 के विद्यार्थियों बुद्धि के माध्यमो की एकल व संयुक्त परिवार के सन्दर्भ में तुलना करना।
6. एकल व सयुक्त परिवार के विद्यार्थियों को संवेगात्मक बुद्धि के माध्यमों की तुलना करना।

परिकल्पनाएँः

1. 15 से 19 वर्ष के मध्य छः छः माह की बढती आयु क्रम में एकल एंव संयुक्त के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमान में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. 16 से 19 वर्ष तक की आयु के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमान पर एकल एंव संयुक्त परिवार का एक जैसा प्रभाव पडता है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध कार्य में उच्च माध्यमिक स्तर के अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्यन आयु व उच्च संवेगात्मक वृद्धि का मापन किया गया है। जिनके लिये सर्वेक्षण विधि की शोध विधि को प्रयुक्त किया गया।

जनसंख्या व न्यादर्शः प्रस्तुत शोध अध्ययन के अन्तर्गत राज्य के हरिद्वार जनपद के बहादराबाद ब्लाक के इंटर कक्षा में अध्ययनरत समस्त विद्यार्थियों को जनसंख्या माना गया है तथा न्याय दर्शन की यादृच्छिक विधि का प्रयोग करके दो इन्टर कॉलेजों का चयन किया गया और इनमें अध्ययनरत कक्षा ग्प के उन विद्यार्थियों को न्यादर्श में सम्मिलित किया गया जो कि ऑकडे संयुक्त के दिन उपलब्ध थे। ऐसे कुल 100 विद्यार्थी न्यादर्श में सम्मिलित हुये।

शोध उपकरण

1. संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण
2. आयु की गणना विद्यार्थियों की जन्मतिथि के आधार पर ऑकडा संग्रह तिथि (दिनांक 20 जुलाई 2021) से की गयी।
3. परिवार का प्रकार (एकल/संयुक्त) विद्यार्थियों से अंकित करवाकर पता लगाया गया ।
4. प्रक्रिया :– शोधार्थी ने पाया कि 100 विद्यार्थियों में 30 संयुक्त परिवार के ओर 70 एकल परिवार से है। तदुपरान्त विद्यार्थियों द्वारा उतरित परीक्षण प्रश्नो को अंकन किया गया और प्राप्त ऑकड़ों को सारणीबद्ध करके उनकी व्याख्या की गई।
5. ऑकड़ों का विश्लेषण एंव व्याख्या शोधार्थी ने परिकल्पनाओं की जॉच निम्नवत की।

परिकल्पना क्रमांक –

15 से 19 वर्ष के मध्य छः छः माह की बढती आयु क्रम में एकल एंव संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि मध्यमान में कोई सार्थक अन्तर नही है।

इस हेतु निम्न सारणी (1) को निर्मित किया गया–

सारणी 1: एकल एंव संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों की छः छः माह के बढते आयु क्रम पर संवेगात्मक बुद्धि की माध्यमानों पर तुलना

आयु क्रम	एकल परिवार के विद्यार्थी			संयुक्त परिवार के विद्यार्थी			$M_1 M_2$	ज.मान	सार्थकता स्तर
	N_1	M_1	6_1	N_2	M_2	6_2			
15 से 15.5 वर्ष	8	21.63	2.82	5	23.80	1.52	1.17	0.96	Not Signficant

15.5 से 16 वर्ष	12	21.46	3.66	5	22.00	1.80	0.54	0.41	N.S.
16 से 16.5 वर्ष	14	22.41	1.22	5	24.50	2.07	2.09	2.14	0-05
16.5 से 17 वर्ष	12	22.85	2.52	6	23.00	3.18	0.15	0.10	N.S.
17 से 17.5 वर्ष	9	23.34	2.41	2	26.50	1.50	3.16	2.37	0-05
17.5 से 18 वर्ष	6	19.50	26.61	3	24.25	2.39	4.75	2.95	0-01
18 से 18.5 वर्ष	6	21.00	2.82	2	22.50	1.50	1.50	0.96	N.S.
18.5 से 19 वर्ष	3	23.75	1.31	2	24.00	1.50	0.25	0.19	N.S.

उपरोक्त सारणी से विदित होता है कि 15 से 19 वर्ष के छःछः माह के प्रत्येक आयु क्रम पर एकल परिवार को तुलना में संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान अधिक पाया गया है। किन्तु 16 से 16.5 वर्ष के मध्य एंव 17 से 18 वर्ष तक विद्यार्थियों में यह मान 0.05 से पर सार्थक प्राप्त हुआ है। जो यह स्थिति है कि यद्यपि एकल परिवार की तुलना में संयुक्त परिवार के वातावरण का 15 से 19 वर्ष की आयु क्रम में विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर अधिक गुणात्मक प्रभाव पडता है। किन्तु 16 से 16.5 वर्ष तथा 17 से 18 वर्ष के आयुक्रम के ही 95 प्रतिशत तक विद्यार्थियों पर यह प्रभाव सार्थक पाया गया है। जिससे यह कहा जा सकता है कि 16 वर्ष से 18 तक के 95 प्रतिशत तक विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर एकल परिवार की अपेक्षा संयुक्त परिवारिक अपना विशिष्ट प्रभाव डालता है। तदैव परिकल्पना क्रमांक तथा अंशातः स्वीकृत और अंशतः अस्वीकृत हो जाती है।

परिकल्पना क्रमांक (2) का परीक्षण

15 से 19 वर्ष तक की आयु के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमान पर एकल एंव संयुक्त परिवार का प्रभाव एक जैसा पडता है।

इस हेतु सारणी कमांक (2) निर्मित की गई

सारणी 2: 15 से 19 वर्ष आयु के विद्यार्थियो की संवेगात्मक बुद्धि पर एकल एंव संयुक्त परिवार के प्रभाव की मध्यमान के पदों में तुलना

परिवार का प्रकार	विद्यार्थी संख्या	संवेगात्मक बुद्धि के		मध्यमान में अन्तर (M1, M2)	t - मान	सार्थकता
		मध्यमान (M)	मानक विचलन			
एकल	70	21.91	4.59	2.02	2.44	0
संयुक्त	30	23.93	3.06			

उपरोक्त विवरण से विदित होता हैं कि एकल परिवार की अपेक्षा संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों को संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान अधिक है (23.93≥21.91) और दोनो मध्यमानो के मध्य पूरा अन्तर का ..... मान –2.44 है जो कि मानक सारणी ने 0.02 सार्थकता स्तर के ..... मान – 2.37 से अधिक है। जो यह दर्शाता है कि एकल परिवार की तुलना में 98 प्रतिशत विद्यार्थियो की संवेगात्मक बुद्धि अधिक होती है। इससे हमारी परिकल्पना कमांक (2) अस्वीकृत हो जाती है और यह कहा जा सकता है कि 15 से 19 वर्ष के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर एक परिवार की अपेक्षा संयुक्त परिवार के वातावरण का अधिक प्रभाव पडता है। इसके लिये यह कारण हो सकता है कि संयुक्त परिवार में अपने संवेगो को व्यक्त करने और दूसरो के संवेगों को जानने समझने के अवसर अधिक प्राप्त होते है। साथ ही इसमें उन्हें परिवार की अधिक सदस्यों का सक्रिय सहयोग प्राप्त होता है।

निष्कर्षः–प्रस्तुत शोधकर्ता से निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये जा सकते है।

1. 15 से 16 तक की आयु कम के विद्यार्थियों को संवेगात्मक बुद्धि पर एकल एंव संयुक्त परिवार के प्रभाव सार्थक अन्तर नही होता है।
2. 16 से 18 वर्ष तक की आयु के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर एक परिवार की अपेक्षा संयुक्त परिवार का विशिष्ट सार्थक प्रभाव पडता है।
3. 15 से 19 वप्र के समग्र विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर एकल परिवार की तुलना में संयुक्त परिवार का प्रभाव 98 प्रतिशत अधिक पडता है।
4. किशोरावस्था के विद्यार्थियों को संयुक्त परिवार में रखने का प्रयास करना चाहिये।

सन्दर्भ

1. अयाल एम एन 2017–फेमिली एनवायरनमेन्ट एण्ड सेल्फस्टीम एंड प्रेडिक्चर्स ऑफ साइकोलोजिकल एडजस्टमेन्ट ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स फ्राम डिवोर्स्ड होम इन क्रॉस सेवर स्टेट नाइजिरीया।
2. आई0ओ0एस0आर0 जर्नल ऑफ रिसर्च एण्ड मेथड इन एजुकेशन 7(6),1,9–16।
3. सिंह ए0 एंव देवी एस0 2018– मेंटल हेल्थ ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्टस इन रिलेशन टू फैमिली एनवायरनमेन्ट/रिसर्च इन इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ 853–861 8 (4)सोशल साइसेन्स ।
4. टी0 मल्होत्रा (2016)–एन्फलू एन्स ऑफ फैमिली इनवायरनमेन्ट ऑफ स्टूडेन्टस एंड फॉरमल आप्रेशनल स्टेज ऑफ काग्नीटिव डेवेलपमेन्ट । इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एन्वायरनमेन्ट इकॉलोजी, फैमिली एंड अर्बन स्टडीज, 6(2),13–24,2016।
5. पेस्टालॉजी – उद्धृत उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक डा0 राशकल पाण्डे मे0 विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा वर्ष 2005।